

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 11 अध्याय 19: ज्ञान की पूर्णता

5 October 2026



*भगवान् श्रीकृष्ण उद्धव को पुनः उपदेश देते हैं कि अनुभूति तथा भक्ति से युक्त ज्ञान की किरण प्रत्येक अन्य शुद्धिकारक साधन से श्रेष्ठ है, और फिर भीष्म द्वारा राजा युधिष्ठिर को दिए गए प्राचीन उपदेश का स्मरण करते हुए, भक्ति की सीढ़ियाँ प्रकट करते हैं तथा एक-एक करके उन सभी गुणों की परिभाषा देते हैं जिन्हें एक जिज्ञासु हृदय समझना चाहता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

प्रिय भक्त, श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है, जो श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा है। यहाँ भगवान् उद्धव के लिए समस्त आध्यात्मिक साधना का शिखर-रत्न प्रस्तुत करते हैं: ऐसा ज्ञान जो शुष्क तर्क नहीं अपितु जीवन्त अनुभूति है, और जो सदैव वैराग्य तथा प्रेमपूर्ण भक्ति से जुड़ा हुआ है। उद्धव, इस संसार के त्रिविध दुःख से संतप्त होकर, भगवान् से शरण की याचना करते हैं; और भगवान् महाभारत युद्ध की समाप्ति की एक पावन स्मृति सुनाकर उत्तर देते हैं — कैसे मृत्युशय्या पर पड़े भीष्म ने राजा युधिष्ठिर को यही मार्ग सिखाया था, भक्ति को जन्म देने वाले कर्मों के नाम बताए, और कोमल सूक्ष्मता से उन सभी गुणों की परिभाषा दी जिन्हें एक निष्ठवान् आत्मा जानना चाहती है: यम तथा नियम, शम तथा धृति, वास्तविक धन तथा वास्तविक निर्धनता, सच्चा मित्र तथा सच्चा घर, और अन्त में वह एक चिह्न जो गुण को दोष से अलग करता है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भगवत महापुराण
- स्कन्ध: 11 (एकादश स्कन्ध)
- अध्याय: 19 (उन्नीसवाँ प्रवचन)
- अध्याय शीर्षक: आध्यात्मिक ज्ञान की पूर्णता
- प्रधान वक्ता: श्रीकृष्ण, उद्धव को उपदेश देते हुए; उनकी कथा के भीतर, भीष्म राजा युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए; समस्त सुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित को कहा गया
- प्रधान श्रोता: उद्धव; कथा के भीतर, राजा युधिष्ठिर; तथा राजा परीक्षित
- मुख्य स्थान: द्वारका, भगवान् के उद्धव के साथ संवाद में; कथा के भीतर, कुरुक्षेत्र के समीप वह स्थान जहाँ महायुद्ध के पश्चात् मृत्युशय्या पर पड़े भीष्म ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया
- केन्द्रीय विषय: वैराग्य, अनुभूति तथा भक्ति से युक्त ज्ञान; भक्ति-योग को जन्म देने वाली सीढ़ियाँ; तथा यम, नियम एवं उद्धव द्वारा पूछे गए अनेक गुणों की भगवान् द्वारा दी गई सटीक परिभाषाएँ
- प्रधान श्लोक-सीमा: स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 1–45
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भगवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अठारहवें प्रवचन में, भगवान् ने जीवन के प्रत्येक आश्रम — ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी तथा संन्यासी — के कर्तव्यों का वर्णन किया, और दिखाया कि प्रत्येक इन्द्रिय-सुख के पश्चात् आने वाले दुःख से विरक्त हो चुकी आत्मा को चिन्तनशील गुरु की शरण लेनी चाहिए। उन्होंने सिखाया कि अपने ही कर्तव्य का निष्काम पालन, जब केवल उन्हीं को समर्पित किया जाता है, हृदय को शुद्ध करता है और अन्ततः उनके ही दिव्य स्वरूप के दर्शन कराता है। धर्म के भक्ति में परिपक्व होने का यह मार्ग दिखाकर, भगवान् अब इस अध्याय में उसी ज्ञान की चरम पूर्णता उद्घाटित करते हैं।

ज्ञान का दीपक जो आत्मा तक ले जाता है

भगवान् ने अपना उपदेश पुनः आरम्भ किया। उन्होंने घोषित किया कि जो आत्मा प्रत्यक्ष अनुभूति में परिणत विद्या से सम्पन्न है — जिसने आत्मा को सचमुच जान लिया है और जो अब केवल अनुमान पर निर्भर नहीं रहती — उसे इस भेद-भरे संसार को केवल अपने में प्रकट एक माया-मात्र जानना चाहिए, और अन्ततः इस ज्ञान को भी अपने ही चरणों में समर्पित कर देना चाहिए।

श्रीभगवानुवाच

यो विद्याश्रुतसम्पन्नः आत्मवान् नानुमानिकः ।

मायामात्रमिदं ज्ञात्वा ज्ञानं च मयि सन्न्यसेत् ॥ १ ॥

śrī-bhagavān uvāca yo vidyā-śruta-sampannaḥ ātmavān nānumānikaḥ māyā-mātram idaṁ jñātvā jñānaṁ ca mayi sannyaset

अर्थ: भगवान् ने कहा: जो प्रत्यक्ष अनुभूति में परिणत विद्या से सम्पन्न है, जिसने आत्मा को जान लिया है और जो अनुमान पर निर्भर नहीं रहता, उसे इस भेद-भरे संसार को मुझमें प्रकट एक माया-मात्र जानना चाहिए — और अन्ततः इस ज्ञान को भी मुझमें समर्पित कर देना चाहिए। (स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 1)

ऐसे ज्ञानी के लिए, भगवान् ने कहा, मैं ही एकमात्र प्रिय वस्तु हूँ, मैं ही लक्ष्य हूँ और उसे पाने का साधन भी; कोई तपस्या, तीर्थ, जप या दान उस सिद्धि को नहीं ला सकता जो ज्ञान की एक किरण से प्राप्त होती है। प्राचीन काल के मुनियों ने मुझे, अपने अन्तर्यामी को, अपने ही हृदय में पूजा, और इस प्रकार मुझे ही परम सिद्धि के रूप में प्राप्त किया। और शरीर, इन्द्रिय तथा मन का त्रिविध विकार जो आत्मा पर टिका प्रतीत होता है, उन्होंने कहा, वह केवल एक ऐसी माया है जो आदि तथा अन्त के मध्य प्रकट होती है परन्तु उन्हें वास्तव में स्पर्श नहीं करती — आत्मा, रस्सी में भ्रम से दिखने वाले सर्प के नीचे की रस्सी के समान, जन्म, वृद्धि, क्षय तथा मृत्यु से सदा अपरिवर्तित रहती है।

भय के सागर से उद्धव की पुकार

अत्यन्त भावविभोर होकर, उद्धव ने विश्वेश्वर से प्रार्थना की कि वे अपने ही सच्चे स्वरूप में, इस पावन तथा अत्यन्त प्राचीन ज्ञान का — वैराग्य तथा अनुभूति से युक्त ज्ञान का, तथा ब्रह्मा जैसे महानुभावों द्वारा भी खोजे गए भक्ति के मार्ग का — पूर्ण वर्णन करें। उन्होंने स्वीकार किया कि संसार के भयावह पथ पर त्रिविध दुःख से पीड़ित होकर, उन्हें भगवान् के चरणों के अतिरिक्त कहीं और शरण दिखाई नहीं देती, जो छत्र के समान अमृत की वर्षा करते हैं। यह आत्मा, उन्होंने करुणापूर्वक कहा, संसार के गहरे गड्ढे में गिरी है, काल रूपी सर्प से डँसी हुई, तथापि क्षुद्र इन्द्रिय-सुखों की तीव्र तृष्णा से व्याकुल है; अतः अपार महिमा वाले भगवान् इस आत्मा को उठाएँ, और इसे मुक्तिदायक वचनों से सींचें।



संसार के त्रिविध दुःख से संतप्त, उद्धव पुकारते हैं कि उन्हें भगवान् के चरणों के अतिरिक्त कहीं शरण नहीं दिखती, जो छत्र के समान अमृत की वर्षा करते हैं (श्लोक 9-10)।

राजा युधिष्ठिर तथा भीष्म का स्मरण

उत्तर में, भगवान् ने स्मरण किया कि बहुत पहले, राजा युधिष्ठिर — जो किसी भी प्राणी से शत्रुता नहीं रखते थे — ने यही प्रश्न धर्म के ज्ञाताओं में अग्रणी भीष्म से पूछा था, जबकि समस्त वरिष्ठजन सुन रहे थे। जब भरतवंशियों का महायुद्ध समाप्त हो गया, तब अपने स्वजनों की मृत्यु से शोकाकुल युधिष्ठिर ने मृत्युशय्या पर पड़े भीष्म से मुक्ति की ओर ले जाने वाले आचरण के विषय में पूछा। “मैं अब तुम्हें वे ही शिक्षाएँ बताऊँगा,” भगवान् ने उद्धव से कहा, “जो ज्ञान, वैराग्य, अनुभूति, श्रद्धा तथा भक्ति से समृद्ध हैं, और जिन्हें मैंने स्वयं दिव्य व्रतधारी भीष्म के मुख से सुना था।”

ज्ञान तथा विज्ञान का वास्तविक स्वरूप

भगवान् ने तब अपने शब्दों की सावधानीपूर्वक परिभाषा दी। सच्चा ज्ञान, उन्होंने समझाया, वह है जिससे आत्मा प्रत्येक प्राणी में प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों, इन्द्रियों तथा मन, स्थूल भूतों तथा तीन गुणों को देखती है, और उनके माध्यम से उन सभी में बहने वाली एक ही सत्ता को देखती है। अनुभूति इससे भी आगे का चरण है — जब मनुष्य बहुत्व को अब केवल एक से व्याप्त नहीं देखता, अपितु उस एक सत्ता को ही देखता है, जो तीन गुणों के प्रत्येक परिवर्तन के उत्पन्न होने, स्थिर रहने तथा विलीन होने पर विचार करने से प्राप्त होता है। वही सत्य है जो सृष्टि के आदि तथा अन्त में स्थित रहता है और मध्य की प्रत्येक अवस्था से होकर गुजरता है। ज्ञान के साधनों में — श्रुति, प्रत्यक्ष, ऐतिह्य तथा अनुमान — विवेकी आत्मा, पदार्थ के अनन्त भेदों में कोई स्थायी आधार न पाकर, शान्त वैराग्य से उनसे विमुख हो जाती है; और क्योंकि प्रत्येक कर्म-फल परिवर्तनशील है, विवेकी जन अदृश्य लोकों को भी, ब्रह्मा के लोक तक, दुःख से स्पर्शित तथा नाशवान् ही समझते हैं, जैसे वे इस दृश्य संसार को समझते हैं।

भक्ति तक ले जाने वाली सीढ़ियाँ

भक्ति का मार्ग, भगवान् ने कहा, वे पहले ही एक बार दिखा चुके थे; परन्तु क्योंकि उद्धव का हृदय उसके प्रति इतना अनुरक्त हो गया था, वे फिर से वह राजमार्ग बताएँगे जिससे उनके प्रति भक्ति जन्म लेती है। आगे जो आता है वह भागवत के सबसे प्रिय अंशों में से एक है — भक्ति-योग की साक्षात् सीढ़ियाँ।

श्रद्धामृतकथायां मे शश्वन्मदनुकीर्तनम् ।
परिनिष्ठा च पूजायां स्तुतिभिः स्तवनं मम ॥ २० ॥
आदरः परिचर्यायां सर्वाङ्गैरभिवन्दनम् ।
मद्भक्तपूजाभ्यधिका सर्वभूतेषु मन्मतिः ॥ २१ ॥
मदर्थेष्वङ्गचेष्टा च वचसा मद्गुणैरङ्गम् ।
मय्यर्पणं च मनसः सर्वकामविवर्जनम् ॥ २२ ॥
मदर्थेऽर्थपरित्यागो भोगस्य च सुखस्य च ।
इष्टं दत्तं हुतं जप्तं मदर्थं यद् व्रतं तपः ॥ २३ ॥
एवं धर्मैर्मनुष्याणामुद्धवात्मनिवेदिनाम् ।
मयि सज्जायते भक्तिः कोऽन्योऽर्थोऽस्यावशिष्यते ॥ २४ ॥

*śraddhāmṛta-kathāyām me śaśvan mad-anukīrtanam pariniṣṭhā ca pūjāyām stutibhiḥ stavanam
mama ādaraḥ paricaryāyām sarvāṅgair abhivandanam mad-bhakta-pūjābhyadhikā sarva-
bhūteṣu man-matīḥ mad-artheṣv aṅga-ceṣṭā ca vacasā mad-guṇeraṇam mayy arpaṇam ca
manasaḥ sarva-kāma-vivarjanam mad-arthe 'rtha-parityāgo bhogasya ca sukhasya ca iṣṭam
dattam hutaḥ japtaḥ mad-arthaḥ yad vrataḥ tapaḥ evaṁ dharmair manuṣyāṇām
uddhavātma-nivedinām mayi sañjāyate bhaktiḥ ko 'nyo 'rtho 'syāvaśiṣyate*

अर्थ: मेरी अमृत-तुल्य कथाओं को सुनने में दृढ़ श्रद्धा, निरन्तर मेरे नाम का स्मरण तथा कीर्तन, पूजा में सुदृढ़ भक्ति तथा स्तुतियों से मेरा गुणगान, सेवा में श्रद्धापूर्ण उत्साह, समस्त अंगों से मुझे प्रणाम करना, मेरे भक्तों का मुझसे भी अधिक सम्मान करना, प्रत्येक प्राणी में मेरी ही उपस्थिति देखना, शरीर के प्रत्येक कर्म को मेरे प्रयोजन की ओर मोड़ना, वाणी से केवल मेरे गुणों का वर्णन करना, मन को पूर्णतः मुझे समर्पित करना तथा समस्त अन्य इच्छाओं का त्याग करना, मेरे लिए धन, भोग तथा सुख का त्याग करना, और यज्ञ, दान, हवन, व्रत तथा तपस्या केवल मेरी प्रीति के लिए करना — इस प्रकार जीवन व्यतीत करने से, हे उद्धव, जिसने अपना सम्पूर्ण स्व मुझे समर्पित कर दिया है, उसके हृदय में मेरे प्रति भक्ति स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। और जब वह भक्ति आ जाती है, तो फिर पाने को और क्या शेष रहता है? (स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 20-24)



भगवान् भक्ति के राजमार्ग का वर्णन करते हैं — उनकी कथा सुनना, नाम कीर्तन करना, सेवा करना तथा भक्तों का सम्मान — वे ही सीढ़ियाँ जिनसे भक्ति हृदय में जन्म लेती है (श्लोक 20-24)।

समर्पित मन, भ्रमित मन

भगवान् ने आगे कहा कि जब मन शान्त, सत्त्व से पोषित तथा उन्हें समर्पित होता है, तो वह स्वाभाविक रूप से धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा दिव्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता है; परन्तु जब वही मन अनेक विषयों में बिखर जाता है, इन्द्रियों के पीछे दौड़ता है तथा रजोगुण से भारी होता है, तो वह इसके विपरीत — अधर्म, अज्ञान, आसक्ति तथा दिव्यता की हानि — में गिरता है। और तब, अद्भुत स्पष्टता से, भगवान् ने उन्हीं शब्दों की नई परिभाषा दी जिन्हें प्रत्येक जिज्ञासु सामान्यतः मान लेता है।

धर्मो मद्भक्तिकृत् प्रोक्तो ज्ञानं चैकात्म्यदर्शनम् ।

गुणेष्वसङ्गो वैराग्यमैश्वर्यं चाणिमादयः ॥ २७ ॥

*dharmo mad-bhakti-kṛt prokto jñānaṁ caikātmya-darśanam guṇesv asaṅgo vairāgyam
aiśvaryaṁ cāṇimādayaḥ*

अर्थ: वही धर्म कहा जाता है जो मेरे प्रति भक्ति उत्पन्न करे; वही ज्ञान कहा जाता है जो सबमें एक आत्मा का दर्शन कराए; प्रकृति के गुणों से अनासक्ति ही वैराग्य है; और अणिमा-आदि सिद्धियाँ दिव्य ऐश्वर्य हैं। (स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 27)

यहाँ वह एकमात्र कुंजी है जो इस अध्याय के शेष भाग में भगवान् जो कुछ कहने वाले हैं, उसे खोल देती है। जिन उच्च शब्दों को एक साधक सम्मान देना सीखता है — धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य — भगवान् उन्हें शान्तिपूर्वक एक ही मानदण्ड से मापते हैं: क्या यह हृदय को मेरी ओर खींचता है? जो कर्म भक्ति को अस्पर्शित छोड़ दे, वह सच्चा धर्म नहीं; जो दृष्टि एक आत्मा को सर्वत्र न देखे, वह सच्चा ज्ञान नहीं। जब उद्धव अब अपने प्रश्नों की लम्बी सूची पूछेंगे, तो भगवान् प्रत्येक का उत्तर इसी शान्त मानदण्ड से देंगे, जिससे अध्याय के अन्त तक साधारण से साधारण गुण भी, अपनी जड़ में, उन तक पहुँचने का एक द्वार सिद्ध होगा।

उद्धव के प्रश्नों की माला

धार्मिक जीवन की प्रत्येक छाया को समझने की उत्कण्ठा से, उद्धव ने तब प्रश्नों की एक पूरी माला उड़ेल दी, एक से दूसरे में प्रवाहित होती हुई: यम तथा नियम कितने प्रकार के हैं? शम, इन्द्रिय-निग्रह, सहनशीलता तथा धृति क्या हैं? दान, तपस्या, शौर्य, सत्य तथा ऋतु क्या हैं? त्याग, वांछित धन, यज्ञ तथा दक्षिणा क्या हैं? पुरुष का वास्तविक बल, भाग्य, लाभ तथा परम विद्या क्या है? लज्जा, शोभा, सुख तथा दुःख क्या हैं? वास्तविक पण्डित तथा मूर्ख कौन है, सही मार्ग तथा गलत मार्ग कौन सा है, स्वर्ग तथा नरक क्या हैं, सच्चा मित्र तथा सच्चा घर कौन है? धनी कौन है, निर्धन कौन है, दयनीय कौन है, तथा स्वयं का स्वामी कौन है? हे सज्जनों के रक्षक, उद्धव ने विनती की, इन सबका उत्तर, तथा इनके विपरीत का भी, कृपया दें।

बारह यम तथा बारह नियम

भगवान् ने तुरन्त उत्तर दिया, उद्धव द्वारा पूछे गए चौबीस अनुशासनों में से पहले का नाम लेते हुए।

अहिंसा सत्यमस्तेयमसङ्गो ह्रीरसञ्चयः ।

आस्तिक्यं ब्रह्मचर्यं च मौनं स्थैर्यं क्षमाभयम् ॥ ३३ ॥

शौचं जपस्तपो होमः श्रद्धातिथ्यं मदर्चनम् ।

तीर्थाटनं परार्थेहा तुष्टिराचार्यसेवनम् ॥ ३४ ॥

एते यमाः सनियमा उभयोर्द्वादश स्मृताः ।

पुंसामुपासितास्तात यथाकामं दुहन्ति हि ॥ ३५ ॥

*ahimsā satyam asteyam asaṅgo hrīr asaṅcayaḥ āstikyaṁ brahmacaryaṁ ca maunaṁ sthairyam
kṣamābhayaṁ śaucaṁ japas tapo homaḥ śraddhātithyaṁ mad-arcanaṁ tīrthāṇaṁ parārthehā
tuṣṭir ācārya-sevanam ete yamāḥ sa-niyamā ubhayor dvādaśa smṛtāḥ puṁsām upāsītās tāta
yathā-kāmaṁ duhanti hi*

अर्थ: भगवान् ने कहा: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अनासक्ति, लज्जा, असंचय, आस्तिकता, ब्रह्मचर्य, मौन, स्थिरता, क्षमा तथा निर्भयता — ये बारह यम कहे गए हैं। शारीरिक तथा मानसिक शुद्धि, पावन मन्त्रों का जप, तपस्या, हवन, श्रद्धापूर्वक अतिथि-सेवा, मेरी पूजा, तीर्थयात्रा, दूसरों के कल्याण हेतु प्रयास, सन्तोष तथा गुरु-सेवा — ये बारह नियम हैं। भक्तिपूर्वक पालन किए जाने पर, हे प्रिय, ये चौबीस निश्चय ही अपनी निष्ठा के अनुरूप फल देते हैं। (स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 33-35)



भगवान् बारह यम तथा बारह नियम को गुण की एक ही तेजस्वी माला के रूप में बताते हैं, जिसे प्रत्येक आत्मा अपनी क्षमता के अनुसार भक्तिपूर्वक अभ्यास करे (श्लोक 33-

35)।

भगवान् प्रत्येक गुण की परिभाषा देते हैं

यम तथा नियमों के नाम बताकर, भगवान् ने बिना विराम लिए, उद्धव द्वारा पूछे गए शेष प्रत्येक गुण की परिभाषा दी। शम बुद्धि का मुझ पर दृढ़ रहना है; इन्द्रिय-निग्रह इन्द्रियों पर विजय है; सहनशीलता दुःख का धीरजपूर्वक सहन तथा जिह्वा और काम-वासना पर विजय है, और धृति यही दृढ़ता है जो बनी रहती है। दण्ड त्याग देना — जिसे न्यायतः दण्ड दिया जा सकता था उसे भी क्षमा कर देना — सबसे बड़ा दान है; इच्छा का त्याग तपस्या है; अपनी निम्न प्रकृति पर विजय शौर्य है; सबमें एक ही आत्मा का दर्शन सत्य है। जो वाणी सत्य तथा प्रिय दोनों हो वह ऋत कहलाती है; अपने कर्मों में अनासक्ति शुद्धि है; संसार त्यागकर संन्यास ग्रहण करना सच्चा त्याग है। धर्म ही मनुष्य का सर्वाधिक वांछित धन है; मैं स्वयं यज्ञ हूँ; सच्चे ज्ञान का प्रदान ही वास्तविक दक्षिणा है; और प्राण पर नियन्त्रण ही परम बल है, क्योंकि इसी से चंचल मन वश में आता है।

फिर उन्होंने शेष प्रश्नों का उत्तर उतनी ही तेज़ी से दिया। मेरा ही दिव्य ऐश्वर्य वास्तविक सौभाग्य है, और मेरे प्रति भक्ति ही परम लाभ है; एक आत्मा में प्रतीत होने वाले भेद को पार देखना विद्या है, और निषिद्ध कर्मों से सिकुड़ना लज्जा है। अनपेक्षा जैसे गुण ही शोभा हैं; सुख तथा दुःख दोनों से ऊपर उठना सुख है, जबकि सुख देने वाले भोगों की तृष्णा ही दुःख है; और बन्धन तथा मोक्ष दोनों को जानना ही सच्चा पण्डित है, जैसे

शरीर को ही आत्मा मान लेना मूर्खता है। जो मार्ग मुझ तक ले जाए वही सही मार्ग है; जो मन को बिखेर दे वही गलत मार्ग है। सत्त्व का उदय स्वर्ग है, तमस् का सघन होना नरक है; सच्चा मित्र तथा सच्चा गुरु मैं स्वयं हूँ, और मानव शरीर ही सच्चा घर है। जो सद्गुणों से सम्पन्न है वही धनी है; जो कभी सन्तुष्ट नहीं होता वही निर्धन है; जिसने अपनी इन्द्रियों को नहीं जीता वही दयनीय है; तथा जिसका मन विषयों से अनासक्त है वही स्वयं का स्वामी है, जबकि जो उनमें आसक्त रहता है वह, सच कहें तो, एक दास है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देकर, भगवान् ने उस एक शिक्षा से समापन किया जो शेष सबको समेट लेती है।

एत उद्धव ते प्रश्नाः सर्वे साधु निरूपिताः ।

किं वर्णितेन बहुना लक्षणं गुणदोषयोः ।

गुणदोषदृशिर्दोषो गुणस्तूभयवर्जितः ॥ ४५ ॥

eta uddhava te praśnāḥ sarve sādhu nirūpitāḥ kiṁ varṇitena bahunā lakṣaṇaṁ guṇa-doṣayoḥ guṇa-doṣa-dṛśir doṣo guṇas tūbhaya-varjitah

अर्थ: हे उद्धव, तुम्हारे ये प्रश्न सभी भली-भाँति उत्तरित हो गए; परन्तु इतना विस्तार से कहने से क्या लाभ? गुण तथा दोष का लक्षण एक ही पंक्ति में कहा जा सकता है: दूसरों के दोष तथा गुण ढूँढते रहना ही स्वयं दोष है, जबकि वह गुण जो इन दोनों से मुक्त है — जो न गुण देखे न दोष — वही सच्चा गुण है। (स्कन्ध 11, अध्याय 19, श्लोक 45)



प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देकर, भगवान् सबसे कोमल शिक्षा देते हैं — दूसरों के दोष ढूँढना ही दोष है, और दोनों से मुक्त गुण ही सच्चा गुण है (श्लोक 45)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सबसे पावन ज्ञान को भी अन्ततः भगवान् को समर्पित करना होता है। उच्चतम विद्या स्वयं में समाप्त नहीं होती; वह अपने पूर्ण स्व के साथ भगवान् के चरणों में अर्पित होकर ही पूर्ण होती है (श्लोक 1)।

2. भय के सागर से उठी हृदय की पुकार केवल कृपा से शान्त होती है। कोई तपस्या या विधि-विधान उस शरण के समान नहीं जो भगवान् के चरणों में मिलती है, जहाँ शरणागत पर अमृत बरसता है (श्लोक 9-10)।

3. भक्ति सरल, दोहराए जा सकने वाले प्रेम-कर्मों से बढ़ती है। उनकी कथा सुनना, उनके नाम का कीर्तन करना, उनकी सेवा करना, उनके भक्तों का सम्मान करना, और प्रत्येक शब्द तथा कर्म उन्हें समर्पित करना — ये साधारण अभ्यास, निष्ठा से किए जाने पर, वे ही सीढ़ियाँ हैं जिनसे हृदय में भक्ति जन्म लेती है (श्लोक 20-24)।

4. सच्चा धर्म वही है जो भगवान् के प्रति भक्ति को प्रज्वलित करे। यह इस समस्त अध्याय की एकमात्र आध्यात्मिक कुंजी है: भगवान् धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा दिव्य ऐश्वर्य को शान्तिपूर्वक एक ही मानदण्ड से मापते हैं — क्या यह आत्मा को वास्तव में उनकी ओर खींचता है। जो कर्म हृदय को उनकी ओर न मोड़े वह सच्चा धर्म नहीं; जो दृष्टि उन्हें सभी प्राणियों में न देखे वह सच्चा ज्ञान नहीं। उद्धव जिस-जिस गुण के विषय में आगे पूछते हैं, उस सबका उत्तर इसी कसौटी से दिया जाता है, जिससे सन्तोष, सत्यता तथा अतिथि-सेवा जैसा साधारण गुण भी, अपनी जड़ में, भगवान् की ओर खुलने वाला द्वार सिद्ध होता है (श्लोक 27)।

5. यम तथा नियम बन्धन नहीं, एक माला हैं। अहिंसा, सत्य, सन्तोष, पूजा, गुरु-सेवा तथा शेष गुण कठोर प्रतिबन्ध नहीं अपितु उस जीवन को आकार देने वाली चौबीस विधियाँ हैं जो पहले से ही भगवान् की ओर उन्मुख है (श्लोक 33-35)।

6. सामान्य शब्द भगवान् की दृष्टि में असामान्य अर्थ धारण करते हैं। बल प्राण पर नियन्त्रण है; दान क्षमा है; सत्य सबमें एक आत्मा का दर्शन है; सच्चा घर यही शरीर है, जो आत्मा के जागरण हेतु प्राप्त हुआ है (श्लोक 36-39)।

7. गुण का अन्तिम शब्द दूसरों को न जाँचना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देकर, भगवान् सबसे सरल शिक्षा से समापन करते हैं: दूसरों के दोष तथा गुण ढूँढते रहना ही दोष है; सच्चा गुण दोनों से मुक्त है (श्लोक 45)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय में जो मुझे सबसे अधिक छूता है वह भगवान् का धैर्य है जिससे वे उत्तर देते हैं। उद्धव एक प्रश्न नहीं, अपितु प्रश्नों की एक पूरी श्रृंखला पूछते हैं — बल तथा धन, सुख तथा दुःख, स्वर्ग तथा नरक, ज्ञानी तथा मूर्ख के विषय में। भगवान् के लिए इस सूची को मात्र जिज्ञासा समझकर टाल देना सरल होता। इसके विपरीत वे एक-एक शब्द उठाते हैं, जैसे कोई जौहरी एक के बाद एक रत्न उठाता है, और उसे कोमलता से उसके सच्चे स्थान पर रखता है। और जब वे अन्त तक पहुँचते हैं — यम, नियम तथा मानव हृदय के कल्पनीय प्रत्येक गुण को नाम देने के पश्चात् — वे हमें याद रखने के लिए और लम्बी सूची नहीं देते। वे हमें एक ही वाक्य देते हैं: दूसरों में दोष ढूँढना बन्द करो, और तुम्हें वह मिल गया जो तुम खोज रहे थे। उस समापन-वाक्य में कितनी करुणा है। यह मुझे बताता है कि भगवान् को इस बात से कोई रुचि नहीं कि मैं कितने गुण गिना सकता हूँ, अपितु इससे कि मेरी दृष्टि दूसरों के प्रति कोमल हुई है या नहीं। इस अध्याय की प्रत्येक सावधानीपूर्वक दी गई परिभाषा अन्ततः उस एक छोटे, दैनिक चुनाव की ओर मुड़ जाती है — किसी भाई या बहन को बिना निर्णय के देखना, और इस प्रकार उस एक आत्मा की झलक पाना जिसका वर्णन भगवान् आरम्भ से करते आ रहे थे।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज, इस अध्याय की अन्तिम तथा सबसे कोमल शिक्षा को अपनाइए। जब भी आप स्वयं को किसी दूसरे व्यक्ति के दोषों को शान्तिपूर्वक सूचीबद्ध करते हुए पाएँ — या उनके गुणों को भी तुलना के लिए उठाते हुए — रुक जाइए, और उस विचार को आगे बढ़ाए बिना जाने दीजिए। उस छोटे से क्षण में, मौन रूप से उस पल को भगवान् के पावन नाम के साथ अर्पित कीजिए: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” यही वह अभ्यास है जो श्रीकृष्ण ने अपने उपदेश के अन्त में उद्धव को दिया: जो गुण दूसरों को जाँचने की आदत से मुक्त है वही सच्चा गुण है, और वह उसी क्षण उपलब्ध है जब हम उस आदत को छोड़ने का निर्णय करते हैं।

उपसंहार

एकादश स्कन्ध का उन्नीसवाँ प्रवचन उद्धव को, तथा उनके पश्चात् प्रत्येक पाठक को, शुद्ध ज्ञान की ऊँचाइयों से लेकर दैनिक गुण के अत्यन्त साधारण विवरणों तक ले जाता है। भगवान् यह माँगकर आरम्भ करते हैं कि पावन विद्या भी उनके चरणों में समर्पित हो, और उद्धव को वे सीढ़ियाँ दिखाते हैं — श्रवण, कीर्तन, सेवा, भक्तों का सम्मान — जिनसे साधारण भक्ति बढ़ती है। वे स्मरण करते हैं कि भीष्म ने यही मार्ग एक बार युधिष्ठिर को सिखाया था, फिर अविचलित कोमलता से यम, नियम तथा उन सभी गुणों की परिभाषा देते हैं जो एक निष्ठावान् हृदय पूछ सकता है: बल, धन, सुख, मित्रता, स्वर्ग तथा नरक। इस सबके बीच एक शान्त सूत्र बना रहता है — कि धर्म स्वयं वही है जो आत्मा को उनके निकट खींचे। और वे समस्त भागवत की सबसे कोमल शिक्षा से समापन करते हैं: कि गुण, अन्ततः, दूसरों को न जाँचने की स्वतन्त्रता है। इस शिक्षा को हम अपने दिनों में कोमलता से धारण करें, प्रत्येक छोटे कर्म को, तथा प्रत्येक रोके गए निर्णय को, उनके चरणों में भक्ति के रूप में अर्पित करते हुए।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), एकादश स्कन्ध, उन्नीसवाँ प्रवचन, पृष्ठ 601–606।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बन्ध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-19-gyan-ki-sampurnata-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

